पाठ 15. प्रधानमंत्री का चुनाव

पाठ का उद्‌देश्य

प्रस्तुत पाठ में व्यंग्य के माध्यम से देश की राजनीतिक व्यवस्था में नेताओं की सक्रियता पर कटाक्ष किया गया है।

पाठ का सारांश

लेखक शरद जोशी व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि राष्ट्रपति महोदय प्रधानमंत्री के चुनाव को लेकर चिंता में हैं। सारा राष्ट्र सो रहा है मगर राष्ट्रपति जी इसी सोच में डूबे हैं कि किसे प्रधानमंत्री बनाया जाए! दुर्घटना पर दुख प्रकट करने, हेलिकॉप्टर पर बैठकर बाढ़ का नज़ारा देखने, निर्णय टालने आदि-आदि कामों के लिए प्रधानमंत्री की कुर्सी तो भरनी ही चाहिए। राष्ट्रपति जी लेखक से प्रधानमंत्री बनने के लिए कहते हैं परंतु वे मना कर देते हैं। लेखक अपने चेहरे को विभिन्न मुद्राओं में ढालकर देखते हैं परंतु स्वयं को इस पद के योग्य नहीं पाते। बार-बार लेखक के प्रस्ताव ठुकराने पर राष्ट्रपति भवन के कर्मचारी लेखक को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर पटक देते हैं और इसी के साथ लेखक की नींद टूट जाती है। इतनी बड़ी आबादी वाले देश में योग्य प्रधानमंत्री का मिलना कभी-कभी एक मज़ाक बन जाता है।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पाठ का एक-एक अंश पढ़वाएँ। उन्हें पाठ का मूल भाव समझाएँ तथा इस पाठ के लेखक व्यंग्यकार शरद जोशी के व्यक्तित्व से अवगत कराएँ। बताएँ कि शरद जोशी हिंदी के प्रसिद्‌ध व्यंग्यकार होने के साथ-साथ एक पत्रकार एवं पटकथा लेखक भी थे। इनके व्यंग्य में समाज और व्यवस्था पर कटाक्ष होता है।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- पूछें, प्रधानमंत्री का चुनाव कैसे किया जाता है तथा प्रधानमंत्री को पद और गोपनीयता की शपथ कौन दिलवाता है?
- मध्यावधि चुनाव कब होते हैं?
- लोकसभा चुनाव में कोई भी दल या पार्टी कितनी सीटें मिलने पर सरकार बनाने का दावा पेश करती है?
- भारतीय प्रशासन की ऐसी कौन-सी दो बातें हैं जो तुम्हें सबसे अच्छी या खराब नज़र आती हैं?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।